

इकाई-2

स्व एवं व्यक्तित्व

इस अध्याय को पढ़ने के बाद आप –

- स्व संप्रत्यय का अर्थ समझ सकेंगे।
- व्यक्तित्व का अर्थ एवं प्रकार समझ सकेंगे।
- व्यक्तित्व के विभिन्न निर्धारकों जान सकेंगे।
- व्यक्तित्व मूल्यांकन की प्रविधियों को समझ सकेंगे।

परिचय

हम जब किसी व्यक्ति से मिलते हैं तो उसे जानने, समझने का प्रयास करते हैं। हमारा ध्यान इस बात पर भी जाता है कि विभिन्न व्यक्तियों का व्यवहार किस प्रकार अलग-अलग होता है। अन्य व्यक्ति भी जब हमसे मिलते हैं तो वे भी ऐसा ही करते हैं। वे भी हमारे व्यवहार के विभिन्न पक्षों की ओर ध्यान देकर हमें जानने, समझने का प्रयास करते हैं। हम यह भी देखते हैं कि विभिन्न व्यक्तियों का व्यवहार परिस्थितियाँ समान होने पर भी अलग-अलग होता है। हमारे व्यवहार में परिस्थितियाँ समान होने पर भी व्यक्तिगत भिन्नताओं का होने का कारण है – हमारे व्यक्तित्व में भिन्नताएँ होना। इस अध्याय में हम स्व एवं व्यक्तित्व के संप्रत्ययों को समझते हुए इसके सम्बन्धों का अध्ययन करेंगे। 'स्व' को 'आत्म' भी कहा जाता है।

स्व संप्रत्यय (Self concept)

व्यक्ति स्वयं के बारे में, स्वयं की योग्यताओं, क्षमताओं, भावनाओं आदि के बारे में जो विचार रखता है, वे उसके स्व संप्रत्यय का निर्माण करते हैं। एक नवजात शिशु में स्वयं के बारे में धारणा विकसित नहीं होती है। लेकिन जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है, उसका स्व संप्रत्यय आकार लेने लगता है। वह स्वयं के बारे में जानने लगता है, स्वयं की योग्यताओं, क्षमताओं, कमियों आदि के बारे में समझ विकसित कर लेता है जिसके परिणामस्वरूप उसका स्व संप्रत्यय भी निर्मित हो जाता है।

किसी व्यक्ति का स्व संप्रत्यय दो पक्षों से निर्मित होता है – पहला व्यक्तिगत पहचान (personal identity) एवं दूसरा सामाजिक या सांस्कृतिक पहचान (social or cultural identity)। व्यक्तिगत पहचान से तात्पर्य है इसमें व्यक्ति के वे गुण शामिल होते हैं जो उसे दूसरों से अलग पहचान दिलाते हैं। इसमें व्यक्ति का नाम, (जैसे मेरा नाम संजय है), उसकी क्षमताएँ (जैसे मैं तैराक अथवा लेखक हूँ), उसकी विशेषताएँ (जैसे मैं समय का पाबन्द एवं मेहनती हूँ) आदि शामिल किये जाते हैं।

इसी प्रकार सामाजिक या सांस्कृतिक पहचान में व्यक्ति की पहचान वह किन सामाजिक समूहों से जुड़ा होता है, या किस प्रकार की संस्कृति में रहा है, इस आधार पर होती है। जैसे कोई व्यक्ति यह कहे कि वह हिन्दू है अथवा मुस्लिम है, वह उत्तर भारतीय है या दक्षिण भारतीय है, या वह किस आदिवासी समूह से जुड़ा हुआ है। ऐसी सूचनाएँ किसी व्यक्ति के स्व संप्रत्यय के सामाजिक पक्ष को निर्मित करती हैं।

स्व संप्रत्यय का विकास व्यक्ति के अनुभव के साथ ही निर्मित होता जाता है। जब वह समाज के अन्य व्यक्तियों के साथ अनुक्रिया करता है, तो उसे स्वयं के बारे में भी पता चलता है जिसके कारण स्व संप्रत्यय विकसित होता है।

इस प्रकार स्व संप्रत्यय को यदि परिभाषित करें तो यह कहा जा सकता है कि 'हमारे स्वयं के बारे में प्रत्यक्ष, अपनी क्षमताओं, गुणों, विशेषताओं आदि के बारे में जो विचार रखते हैं, उसे स्व संप्रत्यय (self concept) कहा जाता है।

हमारे स्वयं के बारे में विचार, प्रत्यक्ष सकारात्मक भी हो सकता है एवं नकारात्मक भी। ऐसा भी

हो सकता है कि हम किसी क्षेत्र में तो स्वयं को अच्छा मानते हैं जबकि किसी अन्य क्षेत्र में स्वयं को उतना अच्छा नहीं मानते। अर्थात् स्व संप्रत्यय अलग अलग क्षेत्रों में अलग अलग भी हो सकता है। जैसे यदि कोई विद्यार्थी गणित में कमजोर है लेकिन संगीत में दक्ष है उसका स्व संप्रत्यय संगीत में गणित की तुलना में अच्छा या सकारात्मक हो सकता है।

अब हम स्व संप्रत्यय के दो महत्वपूर्ण पक्षों स्व सम्मान एवं स्व नियमन का अध्ययन करेंगे।

स्व सम्मान (Self esteem)

व्यक्ति का स्वयं के बारे में, उसकी क्षमताओं, योग्यताओं के बारे में लिये गये निर्णय को स्व सम्मान कहा जाता है। स्व सम्मान का स्तर उच्च या निम्न हो सकता है। उदाहरण के लिये यदि दो विद्यार्थियों से यह प्रश्न पूछा जाए कि उसके लिये यह कथन 'वह पढ़ाई में होशियार है' एवं 'मेरे सहपाठी मुझे पसंद करते हैं' उनके लिये किस सीमा तक सही है। यदि एक विद्यार्थी यह बताता है कि यह कथन उसके लिये सही है एवं दूसरा यह कहता है कि यह कथन उसके लिये सही नहीं है तो प्रथम विद्यार्थी का स्व सम्मान दूसरे विद्यार्थी की तुलना में अधिक होगा।

बच्चों में स्व सम्मान चार क्षेत्रों में निर्मित होता है – शैक्षिक, सामाजिक, खेलकूद एवं शारीरिक रूप। शैक्षिक स्व सम्मान उच्च होने पर शैक्षिक प्रदर्शन अच्छा होता है। सामाजिक स्व सम्मान उच्च होने पर व्यक्ति सहपाठियों के साथ अच्छे सम्बन्ध रखता है एवं उनके द्वारा पसन्द किया जाता है। इसी प्रकार खेलकूद के क्षेत्र में स्व सम्मान उच्च होने पर व्यक्ति अच्छा खिलाड़ी होता है। यदि बच्चों में इन सभी क्षेत्रों में स्व सम्मान निम्न होता है तो वे तनावपूर्ण या चिन्ताग्रस्त रहते हैं। उनमें अवसाद (depression) भी हो सकता है। ऐसे बच्चे समाज विरोधी (antisocial) क्रियाओं में भी शामिल रह सकते हैं। इनमें मद्यपान, धूम्रपान, मादक द्रव्यों का सेवन करने आदि की प्रवृत्ति भी हो सकती है। इनसे बचने के लिये शैक्षिक संस्थाओं द्वारा नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षण पर जोर दिया जाना आवश्यक है। बच्चों का पालन-पोषण और शिक्षण इस प्रकार का हो जिससे वह स्वयं को सक्षम एवं योग्य व्यक्ति के रूप में पहचानें, उनमें सकारात्मक स्व संप्रत्यय विकसित हो।

स्व नियमन (Self regulation)

व्यक्ति के जीवन में कई ऐसी परिस्थितियां आती हैं, जब हमें अपने व्यवहार पर नियन्त्रण रखना होता है। विद्यार्थी जीवन में कई बार कोई आवश्यकता होने पर भी किसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु उस आवश्यकता की पूर्ति में स्वयं पर नियंत्रण द्वारा देरी की जाती है। उदाहरण के लिये टेलीविजन देखने का शौक होने पर भी परीक्षा में उच्च अंक प्राप्त करने के लक्ष्य हेतु टेलीविजन देखने के व्यवहार को नियन्त्रित करता है। जंक फूड के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव को देखते हुए अपने खानपान की आदतों पर नियन्त्रण भी स्व नियमन का उदाहरण होगा।

व्यक्तित्व का संप्रत्यय (Concept of Personality)

हम आम बातचीत में व्यक्तित्व संप्रत्यय का उपयोग करते हैं। व्यक्तित्व का शाब्दिक अर्थ लैटिन शब्द परसोना से लिया गया है। परसोना उस मुखौटे को कहते हैं जिसका नाटकों में उपयोग किया जाता है। सामान्यतया यह समझा जाता है कि यदि कोई व्यक्ति सुन्दर दिखाई देता है तो उसका व्यक्तित्व अच्छा है। ऐसे में व्यक्तित्व को किसी व्यक्ति के शारीरिक या बाह्य रूप के आधार पर निर्धारित कर लिया जाता है जो कि पूर्णतः सही नहीं है। व्यक्तित्व में शारीरिक गुणों के साथ उसके मनोवैज्ञानिक गुणों को भी शामिल किया जाता है। मनोवैज्ञानिक गुणों के उदाहरणों में किसी व्यक्ति का शान्त स्वभाव का होना, गंभीर होना, शर्मीला होना, खुशमिजाज होना, स्फूर्त होना, बुद्धिमान होना, सहयोगी होना आदि गुण मनोवैज्ञानिक गुण भी शामिल किये जाते हैं। इस प्रकार व्यक्तित्व किसी व्यक्ति के शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक गुणों का एक समुच्चय है। दूसरी बात यह समझनी है कि व्यक्तित्व के ये सभी गुण एक परिस्थिति / समय विशेष में प्रदर्शित होने पर उस व्यक्ति को उस गुण को रखने वाला नहीं मान लिया

जाता है। यदि कोई विशेष स्वभाव व्यक्ति को अनेक बार प्रदर्शित करते हुए देखा जाए तो उस गुण को व्यक्ति के व्यक्तित्व का एक भाग माना जाता है। अर्थात् व्यक्तित्व के गुण अपेक्षाकृत स्थायी भी होते हैं। यह विशेषताएँ या गुण साधारणतया समय के साथ परिवर्तित नहीं होते हैं। व्यक्तित्व की कुछ विशेषताएँ इस अर्थ में गत्यात्मक (dynamic) होती हैं कि वे स्थिति के अनुसार परिवर्तित एवं अनुकूलनशील (adaptive) होती हैं।

किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को समझ लेने से हम यह जान सकते हैं कि यह व्यक्ति किस परिस्थिति में किस प्रकार व्यवहार करेगा। इस प्रकार आलपोर्ट के अनुसार 'व्यक्तित्व किसी व्यक्ति के मनोशारीरिक तंत्र का वह गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण के साथ उसके प्रभावी समायोजन को निर्धारित करता है।

व्यक्तित्व के प्रकार (Types of Personality)

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व को समझने का प्रयास किया है। व्यक्तित्व विभिन्न गुणों का ऐसा समायोजन है जिसके कई पक्ष होते हैं। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा अलग-अलग पक्षों पर बल देने के कारण व्यक्तित्व के उपागम एवं सिद्धांत बन गए हैं। इन उपागमों में व्यक्तित्व के विभिन्न प्रकारों को बताया गया है। इनमें से प्रारूप उपागम का अध्ययन करते हैं।

प्रारूप उपागम (type approach)

एक जैसी विशेषताएँ रखने वाले व्यक्तियों को प्रारूप (type) के रूप में वर्गीकृत करते हैं। एक प्रारूप में एक जैसे व्यवहार दर्शाने वाले व्यक्ति रखे जाते हैं। इस प्रकार यह उपागम व्यक्तियों के अलग-अलग प्रारूपों में वर्गीकृत करता है। यदि एक व्यक्ति किसी प्रारूप में होता है तो उसमें कुछ अपेक्षित व्यवहारों को जाना जा सकता है।

त्रिगुण (trigunas) सत्त्व (Satva), रज (Rajas), तम (Tamas) के आधार पर व्यक्तित्व के तीन प्रकार बताए गए हैं।

अ. सात्त्विक (Satvik) – ऐसे व्यक्तियों में सत्त्व गुण की प्रधानता के कारण इनमें स्वच्छता, सत्यवादिता, कर्तव्यनिष्ठा, अनुशासन आदि गुण होते हैं।

ब. राजसिक (Rajsik) – ऐसे व्यक्तियों में रज गुण की प्रधानता के कारण इनमें तीव्र क्रिया, इन्द्रिय तुष्टि की इच्छा, भौतिकतावादी, दूसरों के प्रति ईर्ष्या आदि की अधिकता होती है।

स. तामसिक (Tamsik) – ऐसे व्यक्तियों में तम गुण की प्रधानता के कारण इनमें क्रोध, घमण्ड, अवसाद, आलस्य, असहायता की भावना की अधिकता होती है।

इसी प्रकार मनोविज्ञान में विभिन्न मनोवैज्ञानिकों शैल्डन, युंग, फ्रीडमैन एवं रोजेनमैन ने व्यक्तित्व के प्रकार दिये हैं, जिनका वर्णन निम्न है।

शैल्डन (Sheldon)– शैल्डन ने व्यक्तित्व के तीन प्रकार बताए हैं–

गोलाकृतिक (Endomorphic)– ऐसे व्यक्ति मोटे, गोल, मृदुल, शिथिल, सामाजिक एवं मिलनसार होते हैं।

आयताकृतिक (Mesomorphic)– ऐसे व्यक्ति मजबूत, पेशीय शरीर वाले, सुगठित शरीर, ऊर्जावान, साहसी होते हैं।

लंबाकृतिक (Ectomorphic)– ऐसे व्यक्ति पतले, लंबे, सुकुमार, कुशाग्रबुद्धि, कलात्मक एवं अन्तर्मुखी होते हैं।

युंग (Jung)– युंग ने व्यक्तित्व के दो प्रकार बताए हैं–

अन्तर्मुखी (Introvert)– ऐसे व्यक्ति शर्मीले होते हैं, अपना समय अकेले व्यतीत करना पसंद करते हैं। दूसरे व्यक्तियों से बातचीत करने, उनसे अन्तर्क्रिया करने में असहज महसूस करते हैं।

बहिर्मुखी (Extrovert)— ऐसे व्यक्ति सामाजिक, बहिर्गामी होते हैं। लोगों से बातचीत करने, उनसे अन्तर्क्रिया करना पसंद करते हैं।

फ्रीडमेन एवं रोजेनमैन (Friedman and Rosenmann)— फ्रीडमेन एवं रोजेनमैन ने व्यक्तित्व के दो प्रकार बताए हैं —

टाइप-ए (Type-A):— टाइप-ए प्रकार के व्यक्तियों में धैर्य की कमी, उच्च अभिप्रेरणा, उतावलापन, स्वयं के पास समय की कमी होना एवं हर समय काम के बोझ से लदे होने का अनुभव करना आदि विशेषताएँ होती हैं। ऐसे स्वभाव के कारण टाइप-ए प्रकार के व्यक्तियों को उच्च रक्तचाप, उच्च कोलेस्ट्रॉल की समस्या अधिक रहती है।

टाइप-बी (Type-B) : ऐसे व्यक्तियों में टाइप-ए की विशेषताओं का अभाव होता है। ये टाइप-ए के ठीक विपरीत प्रकार के व्यक्ति होते हैं।

व्यक्तित्व के निर्धारक (Determinants of Personality)

व्यक्तित्व के निर्धारकों से तात्पर्य उन कारकों से होता है जो व्यक्ति के विकास को प्रभावित करते हैं। ऐसे कारक दो भागों में बाँटे गए हैं। जैविक कारक (Biological factors) एवं पर्यावरणीय कारक (Environmental factors)।

जैविक कारक—

ये वे कारक होते हैं जो व्यक्ति के आनुवंशिकता एवं जैविक प्रक्रियाओं से सम्बन्धित होते हैं। जैविक कारकों में निम्न कारक शामिल हैं—

शारीरिक संरचना एवं शारीरिक स्वास्थ्य—

किसी व्यक्ति की शारीरिक रचना एवं स्वास्थ्य उसके माता—पिता के स्वास्थ्य से वंशानुगत होता है। ऐसा देखा गया है कि लम्बे माता पिता के बच्चे भी लम्बे होते हैं। माता—पिता की त्वचा के रंग का प्रभाव बच्चे की त्वचा के रंग पर भी पड़ता है। अर्थात् व्यक्तित्व के शारीरिक पक्ष के विकास पर जैविक कारकों पर पड़ता है। यदि कोई व्यक्ति शारीरिक रूप से मजबूत होता है इसका प्रभाव मानसिक शीलगुणों के विकास पर भी पड़ता है।

अन्तःस्त्रावी ग्रन्थियां (Endocrine glands)

अन्तःस्त्रावी नलिकाविहीन ग्रन्थियां हैं जिनके स्त्राव हार्मोन (hormone) कहलाते हैं। शरीर में स्थिति विभिन्न अन्तःस्त्रावी ग्रन्थियां जैसे पीयूष, एड्रीनल, थायराइड, पैराथायराइड, पैंक्रियास, यौन ग्रन्थियां आदि किसी व्यक्ति के शारीरिक विकास को नियन्त्रित करती हैं। यदि इनके द्वारा स्त्रावित हार्मोन के स्त्राव में कमी या अधिकता हो जाए तो व्यक्ति विभिन्न शारीरिक एवं मानसिक कमियों से ग्रसित होता है जिससे उसका व्यक्तित्व प्रभावित होता है।

पर्यावरणीय कारक

ये ऐसे कारक हैं जिनका संबंध व्यक्ति के बाह्य वातावरण, उसका समाज, संस्कृति से है। पर्यावरणीय कारकों में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक कारक शामिल किये जाते हैं।

सामाजिक कारकों में व्यक्ति जिस समाज में रहता है, जिस परिवार में रहता है वहां का वातावरण, आर्थिक—स्थिति, पालन पोषण का प्रभाव व्यक्तित्व विकास पर पड़ता है। माता—पिता का बहुत अधिक सख्त होना या बहुत अधिक लाड़—प्यार देना, बच्चे की हर बात को मानना भी व्यक्तित्व को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है। परिवार के सदस्यों के मध्य आपसी सम्बन्ध अच्छे होने पर

बच्चों में आत्म विश्वास, अन्य लोगों पर विश्वास आदि गुण विकसित होते हैं। विद्यालयी परिवेश, मित्र समूह आदि कारकों का प्रभाव भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इनके अलावा व्यक्ति जिस संस्कृति में पला बढ़ा होता है, वहां के तौर तरीके, रीति रिवाज, धार्मिक गुण आदि उसके व्यक्तित्व पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं।

व्यक्तित्व का आंकलन (Personality Assessment)

हम अपने जीवन में अन्य व्यक्तियों को हमारे उनके साथ पूर्व अनुभवों, उनसे बातचीत द्वारा, उनको देखकर, अन्य लोगों/स्त्रोतों से उनके बारे में प्राप्त सूचनाओं के आधार पर समझने का प्रयास करते हैं। व्यक्तित्व को समझने के हमारे प्रयास अनौपचारिक होते हैं जो वस्तुनिष्ठता को कम कर सकता है।

किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को समझने के लिये उद्देश्यपरक औपचारिक प्रयास को व्यक्तित्व का मूल्यांकन कहा जाता है।

व्यक्तित्व के मूल्यांकन को हम निम्न तीन भागों में अध्ययन करेंगे।

1. स्व प्रतिवेदन मापक
2. प्रक्षेपी तकनीकें
3. व्यवहारपरक विश्लेषण

स्व प्रतिवेदन मापक (Self report measures)

व्यक्तित्व मूल्यांकन की इस परीक्षण विधि में व्यक्ति से स्वयं उसके बारे में पूछकर उसके व्यक्तित्व का मूल्यांकन किया जाता है। इस विधि में प्रयोज्यों से विभिन्न कथन/प्रश्नों पर अपनी अनुक्रिया देनी होती है। इन अनुक्रियाओं को अंक प्रदान किये जाते हैं। प्राप्त अंकों की व्याख्या को परीक्षण के लिए विकसित मानकों के आधार पर उनकी व्याख्या की जाती है। कुछ स्व प्रतिवेदन मापक के रूप में उपयोग में ली जाने वाले व्यक्तित्व परीक्षण निम्न हैं –

मिनेसोटा बहुपक्षीय व्यक्तित्व सूची (एमएमपीआई)

इस परीक्षण का विकास हाथवे एवं मेकिन्ले द्वारा किया गया। यह परीक्षण व्यक्तित्व से जुड़े विभिन्न मनोविकारों की पहचान करने में अत्यन्त प्रभावी है। इसका परिशोधित रूप एमएमपीआई-2 भी उपलब्ध है। इसमें 567 कथन हैं। यह परीक्षण 10 उपमापनियों में विभाजित है।

आइजेंक व्यक्तित्व प्रश्नावली (ई.पी.क्यू.)

आइजेंक द्वारा विकसित इस परीक्षण में व्यक्तित्व के दो आयामों अंतर्मुखता-बहिर्मुखता और सांवेगिक स्थिरता-अस्थिरता का मूल्यांकन किया जाता है। बाद में इसमें तीसरा आयाम मनस्तापिता को जोड़ा गया। इससे ग्रसित व्यक्ति में भावनाओं की कमी, लोगों के साथ कठोर अर्न्तक्रिया करना, आक्रामकता, समाजविरोधी, अहंकेन्द्रितता सम्बन्धी समस्याएं होती हैं।

सोलह व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली (16 पी.एफ.)

यह परीक्षण केटल द्वारा विकसित किया गया। इस परीक्षण का उपयोग उच्च विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों एवं वयस्कों के लिये किया जा सकता है। यह परीक्षण व्यावसायिक निर्देशन में उपयोगी है। इनके अलावा भी मनोविज्ञान में व्यक्तित्व के मूल्यांकन के लिये अनेक स्व प्रतिवेदन मापक प्रचलित हैं। एक महत्वपूर्ण बात यह है कि इन सभी व्यक्तित्व परीक्षणों के उपयोग एवं इनसे प्राप्त परिणामों की व्याख्या के लिये मनोवैज्ञानिक ज्ञान, प्रशिक्षण एवं कौशल की आवश्यकता होती है। अतः इनका उपयोग एक मनोवैज्ञानिक द्वारा ही किया जाता है।

प्रक्षेपी तकनीकें (Projective techniques)

स्व प्रतिवेदन मापक में व्यक्ति, जिसका मूल्यांकन किया जा रहा है, स्पष्ट रूप से जानता है कि

उससे क्या प्रश्न पूछे जा रहे हैं। मनोवैज्ञानिकों ने यह पाया कि कभी-कभी व्यक्ति स्पष्ट रूप से स्वयं के बारे में बताने में, अपनी निजी भावनाओं, विचारों, अभिप्रेरणाओं को व्यक्त करने में हिचकिचाते हैं। ऐसा होने पर व्यक्ति अपनी अच्छी छवि निर्माण हेतु या सामाजिक दृष्टि से वांछनीय होने हेतु अपना उत्तर दे सकते हैं। इसके कारण व्यक्तित्व का मापन पूर्णतः सही नहीं हो सकता है। इस समस्या से निपटने के लिये प्रक्षेपी तकनीकें एक विकल्प के रूप में उपयोग की जा सकती हैं।

प्रक्षेपी तकनीकें व्यक्तित्व के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त पर आधारित हैं। सिगमण्ड फ्रायड इस सिद्धान्त के प्रतिपादक हैं। उनके अनुसार मानव व्यवहार का एक बड़ा भाग अचेतन मन की अभिप्रेरणाओं द्वारा निर्धारित होता है। अचेतन मन में व्यक्ति की दबी हुई इच्छाएं, अव्यक्त भावनाएं, अनैतिक इच्छाएं आदि दबी रहती हैं। अचेतन मन व्यक्तित्व के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता हुआ व्यक्ति के क्रियाकलापों को प्रभावित करता है। इसीलिये मनोवैज्ञानिकों विशेषकर फ्रायड का यह मानना था कि यदि इस अचेतन मन का मूल्यांकन नहीं किया जाए तो व्यक्तित्व का सही निर्धारण नहीं हो सकता है। अचेतन मन को जानने के लिए आत्मपरक एवं मनोमिति जैसे प्रत्यक्ष विधियाँ पर्याप्त नहीं हैं। अचेतन मन को समझने के लिये मूल्यांकन की अप्रत्यक्ष विधियाँ आवश्यक हैं। प्रक्षेपी तकनीकें इसी श्रेणी में आती हैं।

प्रक्षेपी तकनीकें प्रक्षेपी परिकल्पना पर आधारित हैं। इस परिकल्पना के अनुसार यदि व्यक्ति के सामने अस्पष्ट, असंरचित, अर्धसंरचित, अस्पष्ट अर्थ वाले उद्दीपक सामग्री/प्रश्न रखे जाए तो इन उद्दीपकों की व्याख्या करने के लिये अचेतन में छिपी इच्छाएं, भावनाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जब किसी उद्दीपक का कोई मतलब नहीं निकाल पाता तो वह अपने अचेतन मन की सामग्री को ही उस असंरचित उद्दीपक की व्याख्या करने में उपयोग में लेता हुआ प्रक्षेपित कर देता है। कुछ प्रसिद्ध एवं प्रमुख प्रक्षेपी तकनीकों का यहां वर्णन किया जा रहा है।

रोशा स्याहीधब्बा परीक्षण (Rorschach Ink-blot test)

यह परीक्षण हर्मन रोशा द्वारा विकसित किया गया। इसमें दस स्याही धब्बे जैसे चित्र वाले 10 कार्ड होते हैं। (देखें चित्र 2.1) प्रत्येक स्याही धब्बा 7 x 10 के आकार के कार्ड के ठीक बीच में मुद्रित होता है। प्रयोज्य इन स्याही धब्बों को देखकर यह बताता है कि वह इस कार्ड में क्या देखता है। प्रयोज्य की इन अनुक्रियाओं की व्याख्या/अंकन के लिये एक विस्तृत पद्धति भी तैयार की गई है। इस परीक्षण के उपयोग एवं परिणामों की व्याख्या के लिये कुशल प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।



चित्र 2.1 रोशा स्याही धब्बा परीक्षण में प्रयुक्त एक कार्ड

कथानक संप्रत्यक्षण परीक्षण (टीएटी) (Thematic Apperception test)

यह परीक्षण मार्गन एवं मुरे द्वारा विकसित किया गया। इसमें काली और सफेद रंगों के चित्र वाले 30 कार्ड और एक खाली कार्ड होता है। एक प्रयोज्य के लिये 20 कार्ड उपयोग में लाये जा सकते हैं। इन कार्ड पर कुछ चित्र छपे होते हैं। (देखें चित्र 2.2) इन कार्ड को एक एक करके प्रयोज्य के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। प्रयोज्य को उसमें छपे चित्र के आधार पर एक कहानी लिखने को कहा जाता है। इसके

लिये उसे कुछ प्रश्न भी दिये जाते हैं जैसे – इस चित्र में क्या हो रहा है, इससे पहले क्या हुआ, इसके बाद क्या होगा, चित्र में प्रस्तुत विभिन्न पात्र क्या सोच रहे हैं, अनुभव कर रहे हैं आदि। इन प्रश्नों के उत्तर के आधार पर प्रयोज्य एक कहानी लिखता है। उत्तर के आधार पर प्रयोज्य के अभिप्रेरणा का मापन किया जा सकता है। प्रयोज्य में उपलब्धि अभिप्रेरणा है या शक्ति की अभिप्रेरणा है आदि। टीएटी कार्ड पर आधारित कहानी के मूल्यांकन के लिये विशेष अंकन पद्धति बनाई गई है। यह अंकन एक मानक प्रक्रिया के तहत किया जाता है। इसीलिये इस परीक्षण का उपयोग भी प्रशिक्षित व्यक्ति द्वारा ही किया जा सकता है। बच्चों के लिये इस परीक्षण का अनुकूलन भी किया गया है। यह परीक्षण चिल्ड्रन एपरसेप्शन परीक्षण (सीएटी) कहा जाता है।



चित्र 2.2 – टीएटी में प्रयुक्त कार्ड

वाक्य पूर्ति परीक्षण

इस परीक्षण में अनेक अपूर्ण वाक्यों को प्रयोज्य के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। प्रयोज्य को इन वाक्यों को पूर्ण करना होता है। उदाहरण के लिये कुछ वाक्य दिये गये हैं।

मेरे पिता
मुझे सबसे अधिक डर.....
मेरा जीवन.....

उपर्युक्त वणित प्रक्षेपी तकनीकों के अलावा भी अन्य प्रक्षेपी तकनीकें उपयोग में ली जाती हैं। जैसे शब्द साहचर्य परीक्षण, रोजेनवीग का चित्रगत कुण्ठा आदि।

व्यवहारात्मक विश्लेषण (Behavioural Analysis)

विभिन्न परिस्थितियों में व्यक्ति का व्यवहार उसके व्यक्तित्व के बारे में महत्वपूर्ण सूचनाएँ प्रदान करता है। व्यवहारात्मक विधियों में साक्षात्कार, प्रेक्षण, स्थितिपरक परीक्षण प्रमुख हैं।

साक्षात्कार (Interview)

इसमें व्यक्ति जिसके व्यक्तित्व का मूल्यांकन करना है उनसे बातचीत की जाती है। कुछ विशिष्ट प्रश्नों के द्वारा जानकारी प्राप्त कर व्यक्तित्व का मूल्यांकन किया जाता है।

प्रेक्षण (Observation)

प्रेक्षण का अर्थ है देखना। इस विधि में किसी प्रशिक्षित व्यक्ति द्वारा व्यक्ति के व्यवहार, उसके हाव भाव, शारीरिक भाषा को देखकर उसके व्यक्तित्व के बारे में मूल्यांकन किया जाता है।

स्थितिपरक परीक्षण (Situational tests)

इसमें व्यक्ति को एक विशेष परिस्थिति में रखकर उसके व्यवहार का अध्ययन किया जाता है।

उदाहरण के लिये स्थितिपरक परीक्षण में यह देखा जाता है कि व्यक्ति दबावपरक परिस्थिति में कैसा व्यवहार करता है। इससे उसके व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों का पता चलता है कि वह अत्यधिक गुस्से वाला है या धैर्यवान है आदि।

इस प्रकार व्यक्तित्व मूल्यांकन की विभिन्न विधियों द्वारा हमें व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

महत्वपूर्ण बिन्दु (Important Points)

हमारे स्वयं के बारे में प्रत्यक्ष, अपनी क्षमताओं, गुणों, विशेषताओं आदि के बारे में जो विचार रखते हैं, उसे स्व संप्रत्यय (self concept) कहा जाता है।

किसी व्यक्ति का स्व संप्रत्यय दो पक्षों से निर्मित होता है – पहला व्यक्तिगत पहचान (personal identity) एवं दूसरा सामाजिक या सांस्कृतिक पहचान (social or cultural identity)। व्यक्ति का स्वयं के बारे में, उसकी क्षमताओं, योग्यताओं के बारे में लिये गये निर्णय को स्व सम्मान कहा जाता है।

व्यक्ति के जीवन में कई ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं, जब हमें अपने व्यवहार पर नियन्त्रण रखना होता है। इसे स्व नियंत्रण कहते हैं।

व्यक्तित्व किसी व्यक्ति के शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक गुणों का एक समुच्चय है जो उसके व्यवहार को दूसरों से विशिष्ट बनाती है एवं उसके व्यवहार को स्थायित्व प्रदान करती है। व्यक्तित्व के विभिन्न प्रकार बताए गए हैं। इनमें त्रिगुणों के आधार पर सात्त्विक, राजसिक एवं तामसिक व्यक्तित्व, शेल्डन के अनुसार गोलाकृतिक, आयताकृतिक एवं लंबाकृतिक व्यक्ति, युंग के अनुसार अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्ति, फ्रीडमैन एवं रोजेनमैन के अनुसार टाइप-ए एवं टाइप-बी प्रकार के व्यक्तित्व प्रमुख हैं।

किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को समझने के लिये उद्देश्यपरक औपचारिक प्रयास को व्यक्तित्व का मूल्यांकन कहा जाता है। व्यक्तित्व के मूल्यांकन को तीन विधियों द्वारा करते हैं – स्व प्रतिवेदन मापक, प्रक्षेपी तकनीकें एवं व्यवहारपरक विश्लेषण।

स्व प्रतिवेदन मापक में मिनेसोटा बहुपक्षीय व्यक्तित्व सूची (एमएमपीआई), आइजेंक व्यक्तित्व प्रश्नावली (ई.पी.क्यू.) सोलह व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली (16 पी.एफ.) प्रमुख हैं।

प्रक्षेपी तकनीकों में रोर्शा स्याही धब्बा परीक्षण, कथानक संप्रत्यक्ष परीक्षण (टीएटी), वाक्य पूर्ति परीक्षण आदि प्रमुख हैं। प्रक्षेपी तकनीकें व्यक्तित्व के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त पर आधारित हैं।

प्रक्षेपी तकनीकें प्रक्षेपी परिकल्पना पर आधारित हैं। इस परिकल्पना के अनुसार यदि व्यक्ति के सामने अस्पष्ट, असंरचित, अस्पष्ट अर्थ वाले उद्दीपक सामग्री/प्रश्न रखे जाएं तो इन उद्दीपकों की व्याख्या करने के लिये अचेतन में छिपी इच्छाएं, भावनाओं को उन उद्दीपकों की व्याख्या करने में उपयोग में लेता हुआ प्रक्षेपित कर देता है।

व्यवहारात्मक विश्लेषण में साक्षात्कार, प्रेक्षण एवं स्थितिपरक परीक्षण आते हैं।

अभ्यास प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न

- निम्न में से कौनसी व्यक्तित्व के स्व प्रतिवेदन मापक है?
अ. रोर्शा परीक्षण ब. टीएटी
स. सीएटी द. एमएमपीआई
- निम्न में से कौनसी तकनीक अचेतन मन में छिपी भावनाओं को जानने में उपयोगी है?
अ. स्थितिपरक परीक्षण ब. साक्षात्कार
स. 16 पीएफ द. वाक्य पूर्ति परीक्षण

3. व्यक्ति का स्वयं के बारे में, उसकी क्षमताओं, योग्यताओं का प्रत्यक्षण क्या कहलाता है?
 अ. स्व सम्मान ब. स्व नियन्त्रण
 स. स्व संप्रत्यय द. उपर्युक्त सभी
4. रोशा स्याही धब्बा निम्न में से किस श्रेणी में रखा जाता है?
 अ. व्यवहारात्मक विश्लेषण ब. प्रक्षेपी तकनीकें
 स. स्व प्रतिवेदन मापक द. स्थिति परक परीक्षण
5. निम्न में से कौनसी व्यक्तित्व मापन की व्यवहारात्मक विश्लेषण विधि नहीं है?
 अ. साक्षात्कार ब. स्थितिपरक परीक्षण
 स. रोशा परीक्षण द. प्रेक्षण

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. स्व संप्रत्यय किसे कहते हैं?
2. स्व सम्मान एवं स्व नियमन में क्या अन्तर है?
3. स्व संप्रत्यय के दो पक्ष कौनसे हैं?
4. व्यक्तित्व को परिभाषित करें।
5. व्यक्तित्व के स्व प्रतिवेदन मापक कौनसे हैं?
6. प्रक्षेपी परिकल्पना को समझाइये।
7. टी.ए.टी. में प्रयोज्य क्या कार्य करता है?
8. अचेतन मन को परिभाषित करें।
9. वाक्य पूर्ति परीक्षण में एकांशों के उदाहरण लिखें।
10. व्यवहारात्मक विश्लेषण में कौनसी विधियाँ शामिल हैं?

दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न

1. स्व संप्रत्यय क्या है? इसके सकारात्मक होने के क्या लाभ हैं?
2. स्व नियमन को उदाहरण द्वारा समझाइये। यह स्व सम्मान से किस प्रकार अलग है?
3. व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों को समझाइये।
4. व्यक्तित्व के मूल्यांकन की प्रक्षेपी तकनीकों को उदाहरण सहित समझाइये।
5. व्यक्तित्व के मूल्यांकन की स्व प्रतिवेदन मापक को उदाहरण देकर समझाइये।

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर

1. द 2. द 3. स 4. ब 5. स